'ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षणप्रसार'
-शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे

कोल्हापूर
NAAC Reaccredited 'A'
with CGPA -3.24 (in 3rd cycle)

ISSN : 2281-8848

VIVEK
RESEARCH JOURNAL

A Biannual Peer Reviewed National Journal of Multi-Disciplinary Research Articles

A Special Issue - III

विशेषांक भाग-III

हिंदी गीत और ग़ज़ल: विविध परिदृश्य

January , 2026

अनुक्रम

Sr. No.	Title of Article	Author Name	Page No.
1	चेहिल सरदारे [illegible] ग़ज़लों में जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण'	[illegible]	1-7
2	गुलज़ार के गीतों में आम आदमी	प्रो डॉ. नाज़िम इसाक शेख	8-12
3	आरिफ महात कृत 'तूफानों में जलते दिये' गज़ल संग्रह में भाव और विचारों का निरूपण	डॉ. गीता दोड्डमणी	13-16
4	'तरकश' के आईने में जावेद अख़्तर	डॉ. अनंत केदारे	17-24
5	ज्ञानप्रकाश विवेक की गजलों में आर्थिक परिदृश्य	प्रो. डॉ. अनिल बाबुलाल सूर्यवंशी	25-27
6	समकालीन हिंदी ग़ज़लों में पर्यावरणीय विमर्श : प्रकृति, प्रदूषण और मानव सरोकार	प्रा. सुधाकर कल्लाप्पा इंडी	28-31
7	भारतीय सिनेमा की समीक्षा भी एक साहित्यिक सृजन है...	प्रोफेसर (डॉ.) सुरेश कानडे	32-34
8	राजस्थानी लोक-गीतों में जन-जीवन की सांस्कृतिक प्रथा-परंपराएँ	डॉ . सुधा जांगिड	35-40
9	कुँअर बेचैन की हिंदी गजलों में प्रेम और विरह भाव	डॉ.सागर रघुनाथ कांबळे	41-43
10	हिंदी फिल्मी गीत: एक विवेचन	प्रो. डॉ. आबासाहेब हरिभाऊ राठोड इगडे शीतल कचरू	44-48
11	हिंदी ग़ज़लों में अभिव्यक्त सामाजिक संघर्ष	प्रा. डॉ. दीपक विनायकराव पवार	49-52
12	राकेश कुमार सिंह के 'पठार का कोहरा' उपन्यास में आदिवासी लोकगीत	स्वयंपूर्णा विजय गायकवाड	53-56
13	परंपरा से प्रयोग तक: हिंदी फिल्मी गीत	सारिका मूंदड़ा	57-60
14	"दुष्यंत कुमार की गजल में सामाजिक और राजनीतिक चेतना" (दुष्यंत कुमार कृत "साये में धूप" के विशेष संदर्भ में)	पूनम प्रवीण पाटील,	61-64
15	दुष्यंत कुमार, फैज़ अहमद फैज़ और साहिर लुधियानवी के हिंदी गीत और ग़ज़ल में प्रतिरोधी स्वर: एक सामाजिक विश्लेषण	सिनगरवार पांडुरंग गिरजप्पा	65-67
16	लोकगीत साहित्य व संस्कृति	डॉ.अंजली महेश उबाळे	68-70
17	भोजपुरी और मैथिली के लोकगीतों में नारी चेतना	डॉ.आयेशाबेगम अब्दुलबारी रायनी	71-74
18	'राष्ट्रकवि' प्रदीप के गीत	श्रीमती प्रतिभा दत्तात्रय अडगटला-मोहिते	75-78
19	हिंदी गजलों में स्त्री विमर्श	सोनाली रावसाहेब घालमे	79-84

लोकगीत साहित्य व संस्कृति

डॉ.अंजली महेश उबाळे
दत्ताजीराव कदम आर्ट्स,सायन्स अँड कॉमर्स,
कॉलेज इचलकरंजी, सहाय्यक प्राध्यापिका
मो.नं.9561363346
anjaliubale13@gmail.com

सारांश :-

लोकगीत, साहित्य और संस्कृति एक-दूसरे के साथ जुडे हुए है, जिन्हें हम किसी भी समाज की आत्मा को अभिव्यक्त करनेवाले प्रमुख माध्यम के रूप मे देखते है। लोकगीत ग्रामीण समाज जीवन, वहाँ की संस्कृति की पहचान करा देते है। यह गीत विशिष्ट अवसर तथा त्योंहारों के समय की मौखिक परंपरा है, जो एक दूसरे तक हस्तांतरित की जाती है। इन गीतों में लोगों की आस्था, भावना, अनुभव एवं परंपरा आदि सहज रूप से अभिव्यक्त होते है। अत: यह कहना अनुचित न होगा कि, लोकगीत जनसामान्य के जीवन से उपजे होते है। किसी भी समाज की संस्कृति का एक महत्वपूर्ण अंग लोकगीत है। जिनका यथार्थ चित्रण साहित्य में कर साहित्यकार इन लोकभावनाओं आस्थाओं एवं विश्वासों को साहित्य के माध्यम से सुरक्षित कर उन्हें स्थायित्व प्रदान करता है। जब की संस्कृति समाज के जीवनमूल्य और सामूहिक चेतना का आईना है। किंतु आज के इस आधुनिक युग में ग्रामजीवन की पहचान करा देने वाले लोकगीतों की परंपरा नष्ट होती जा रही है। जिन्हें बचाने के लिए बहुत संघर्ष करना पडता है। इसका यथार्थ चित्रण हमें उपन्यासों में मिलता है।

बीज शब्द :- मौखिक, परंपरा, आस्था, भावना, स्थायित्व, जीवनमूल्य, सामूहिक चेतना, ग्राम जीवन, संघर्ष।

प्रस्तावना :-

साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है। क्योंकि उसमें समाज में घटित हर घटना एवं प्रसंग आदि का यथार्थ चित्रण किया जाता है। लोकगीत भारतीय ग्राम जीवन की आत्मा का यथार्थ प्रतिबिंब होते है। लोकगीतों की विशेषता ये है कि, ये लोगों द्वारा बनाए गए, लोक कंठ से लोक कंठ तक, एक पिढी से दूसरी पिढी तक हस्तांतरित किए जाते है। साथ ही इसमें किसी एक व्यक्ति की नहीं बल्की पूरे समाज जीवन की अनुभूती को शब्दबद्ध किया जाता है। समस्त समाज जीवन के सुख दुःख रितीरिवाज, परंपराए, मान्यताएँ सामूहिक चेतनाएँ तथा जीवन संघर्ष आदि को अभिव्यक्त किया जाता है। यही वह कारण है कि लोकगीत साहित्य के जनसंस्कृतिक घरोवर का अमूल्य अंग माने जाते है। लोकगीतों का लोकसंस्कृति के साथ गहरा नाता है। लोक संस्कृति अगर माँ है तो लोकगीत उसकी संताना ग्रामीण समाज जीवन में घटित होने वाली अनेक घटनाएँ जैसे तिज-त्योंहार, जन्म, विवाह, संस्कार, ऋतू परिवर्तन, देवी-देवतांओ की पूजा-अर्चना एवं खेती से जुडे कर्म आदि कई अवसरों पर ग्रामीणों द्वारा मिल जुलकर लोकगीत गाए जाते है। इसका कारण यह है कि, ग्रामीण समाज इनके माध्यम से अपने संस्कार मान्यताएँ एवं परंपराएँ सुरक्षित रखना चाहता है। सीधी, सरल, सहज भावनाप्रधान भाषा में गाए जाने वाले लोकगीत हृदय को छू जाते है। किंतु आज पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के कारण लोकगीतों की परंपरा नष्ट सी होती जा रही है। इसका वास्तविक चित्रण हमें भारतवंशी, मॉरिशस निवासी अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में मिलता है।

शोध आलेख का विश्लेषण :-

अभिमन्यु अनत जी के उपन्यासों में भारतीय संस्कृति के अंतर्गत आनेवाली यथासंभव सभी बातों का यथार्थ लेखा-जोखा प्रस्तुत होता है। जिसमें तीज-त्यौहार, उत्सव-पर्व, खेल-कूद, खान-पान, वेशभूषा, रहन-सहन, आदतें, मान्यताएँ, रीति-रिवाज, प्रथा-परंपराएँ, शकुन-अपशकुन आदि बातों को प्रामाणिकता से अभिव्यक्त किया है। इन पात्रों को देखने के पश्चात भारतीय ग्रामीण समाज जीवन ही हमारे सामने प्रकट होता है।

गुलामों की भाँति दुःखभरा जीवन जीनेवाले भारतीय मजदूरों ने जहाँ पर अपनी भाषा-धर्म-संस्कृति की रक्षा के लिए जान की चिंता नहीं की। लालच एवं दबावों के बाद भी ईसाईकरण की प्रक्रिया से अपने-आपको बचाया। हिंदी भाषा को सम्मान दिया तथा संस्कृति को बचाए रखा। जिसका चित्रण उपन्यासों में मिलता है, किंतु वर्तमान समय में संस्कृति के हो रहे पतन को भी लेखक समाजोन्मुख लाता है। शिक्षा, ज्ञान-विज्ञान एवं औद्योगिक प्रगती के कारण परिवर्तित हो रहे जीवन को लेखक शब्दबद्ध करता है। साथ ही पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव तथा उसके अंधानुकरण के कारण मॉरिशस स्थित भारतीय लोगों की विसंस्कृतिकरण की

समस्या को भी शब्दांकित करता है। आधुनिक सोच, फिजूलखर्ची, फैशनपरस्त, देखा देखी की प्रवृत्ति आदि कई कारणों से संस्कृति की हो रही हानी को लेखक उपन्यासों में दर्शाता है तथा उसके सुधार की मांग करता है।

लोकगीत :-

'लोक' और 'गीत' इन दो शब्दों के योग से बने 'लोकगीत' शब्द का सामान्य अर्थ लोक में प्रचलित गीत, लोकनिर्मित गीत अथवा लोक-विषयक गीत है। सामान्यतः लोकगीतों के रचियेता अज्ञात होते है तथा वह किसी व्यक्ति विशेष की अनुभूति न होकर संपूर्ण समाज जीवन की अनुभूति होती है। म. गांधी जी के शब्दों में कहा जाए तो, "लोकगीतों में धरती गाती है, पहाड़ गाते है, नदियाँ गाती है, फसलें गाती है, उत्सव, मेले, ऋतुएँ और परंपराएँ गाती है।"[1] लोकगीत ग्रामीण संस्कृति की पहचान करा देते है। यह गीत विशिष्ट अवसर तथा त्यौहारों के समय गाए जाते है। लोकगीतों में लोगों का धार्मिक भाव रहता है। लोकगीत लोककंठ की मौखिक परंपरा है जो एक से दूसरे तक हस्तांतरित की जाती है।

लोकभाषा में गाए जानेवाले लोकगीत मुख्यतः अपनी भाषा, संस्कृति, सुख-दुःख की अनुभूतियाँ एवं भावनाओं का भी प्रतिनिधित्व करते हैं। क्षेमेंद्र सुमन और मल्लिक के शब्दों में, "लोकगीत जनसाधारण के जीवन के सन्निकट होते हैं और उसमें मानवजीवन की वासना, प्रेम, घृणा, लालसा तथा उल्हास-विषाद आदि विषयक उन प्रारंभिक अनुभूतियों का चित्रण होता है।"[2] अर्थात लोकगीत ही लोकसंस्कृति एवं लोकजीवन के वास्तविक परिचायक होते हैं।

मॉरिशस समाज जीवन में भारतीय संस्कृति की पहचान करा देने वाले लोकगीतों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इन भोजपुरी लोकगीतों में मुख्यतः "होली, कजरी, आल्हा, ठूमरी आदि प्रसिद्ध है, जिनसे लोकजीवन की जानकारी मिलती है। 'क्रिओली सेगा (लोकगीत) का भी समाज में अपना एक महत्त्वपूर्ण स्थान है.."।[3] यद्यपि कुली-मजदूरों को अपनी सांस्कृतिक धरोहर लोकगीतों को गाने के लिए भी गोरे-मालिकों की पाबंदियों का सामना करना पड़ा है। उनके भय और आतंक से पीड़ित मजदूरों में चेतना और संघर्ष की लहर दौड़ाने के लिए आगे बढ़ता है 'लाल पसीना' उपन्यास का नायक किसन। कुंदन की सहायता से किसन मजदूरों को अपने पर हो रहे अन्याय-अत्याचार का विरोध करने के लिए संगठित करता है। खेतों में काम करनेवाले मजदूर किसन और कुंदन की उपस्थिति में एक स्वर में गा उठते हैं,

"रतवा भयानक बीत गयल भैया,
टूट गयल नींदवा हमारी हो भैया
अगेवा बढ़न को ओरी बढ़न को।

पहाड़ी के नीचे दूर तक फैले उन खेतों में यह पहला अवसर था जब मजदूरों के स्वर स्वच्छंदता के साथ बाहर आकर वातावरण में गूँज सके। पहली बार हवा और लोगों की साँसे भय से मुक्त थीं"[4]। अतः स्पष्ट है विपरीत स्थिति में भी भारतीय मजदूरों ने अपनी लोकगीतों की परंपरा को जीवित रखने का प्रयास किया है।

लोकगीत आंतरिक पीड़ा, दुःख-दर्द एवं वेदना की अभिव्यक्ति का भी माध्यम रहे रहे हैं। अतः जाँते पर जंतसार गाती हुई औरतें अपनी अंतरिक यातनाओं को इन गीतों के माध्यम से अभिव्यक्त करती हैं। 'और पसीना बहता रहा' उपन्यास का हरि मजदूरों का हिमायती है अतः वह उनके लिए संघर्षरत दिखाई देता है। दृष्टव्य है- "जब भी उसके यहाँ चक्की चलती और औरतें कजरी गाती तो वह उन गीतों की भीतरी पीड़ा से काँप उठता था। न जाने कब से ये औरतें उनमें घुले दर्द को सहती, देखती, सुनती गाती चली आ रही हैं"[5]। अपने दुःख-ददों को लोकगीतों के माध्यम से वाणी देने का प्रयास किया है।

यद्यपि अभाव एवं अत्याचारों के बीच में भी भारतीय मजदूरों ने मॉरिशस में लोकगीतों की परंपरा को जीवित रखा है किंतु आजकल हमारी यह परंपरा पीछे छूटती-सी जा रही है। उसकी जगह अश्लिल की अभिव्यक्ति करनेवाले क्रिओली सेगा तथा फिल्मी गीत ले रहे हैं। 'कुहासे का दायरा' उपन्यास का भगत फिल्मी गीतों के जमाने में भी अपनी लोकगीतों की परंपरा को जीवित रखने के लिए संघर्षरत दिखाई देता है। दृष्टव्य है, "आजकल के फिल्मी गीतों के कारण उसके अपने गीतों का महत्त्व चाहे गिर गया था, फिर भी भगत उन गीतों से और कुछ न सही अपने पुराने दिनों को एक बार फिर से जी लिया करता था"[6]।

'मेरा निर्णय' उपन्यास में भी लेखक ने मॉरिशस की लुप्त होती जा रही लोकगीतों की परंपरा पर चिंता व्यक्त करती हुई लंदन में रहकर लौटी अमिता को दर्शाया है। परिवर्तन के नाम पर गाँव की गायब होती जा रही मूल्यवान धरोहरों के कारण अमीता को बहुत दुःख होता है।

अतः यह कहना अनुचित न होगा कि मॉरिशस में भारतीय संस्कृति की पहचान करा देनेवाले लोकगीतों का प्रचलन है किंतु अब आधुनिक चकाचौंध में ये लोकगीत पीछे छूटते जा रहे हैं। आधुनिक रहन-सहन में गायब से होते जा रहे हैं।

निष्कर्ष :-

अभिमन्यु अनत जी के उपन्यासों में चित्रित सांस्कृतिक बातों का अध्ययन करने के पश्च्यात समस्त मॉरिशस समाज जैसे हमारे आँखों के सामने प्रकट होता है। जिसमें मॉरिशस की अनजान धरती पर अपनी पहचान बनाने के लिए अपने अस्तित्व एवं अस्मिता को बचाने के लिए संघर्षरत भारतीय मजदूरों की व्यथा-कथा प्रस्तुत होती है। सांस्कृतिक संघर्ष के अंतर्गत देश को आजादी मिलने के पूर्व से लेकर अब तक अपनी सांस्कृतिक विरासत को बचाए रखने के लिए भारतीय लोगों द्वारा किए गए संघर्ष का यथार्थ चित्रण मिलता है। आधुनिकीकरण तथा पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के परिणाम स्वरूप विसंस्कृतिकरण की समस्या तथा उनके खिलाफ किया जानेवाला संघर्ष लेखक यथार्थता से शब्दबद्ध करता है। आज भी अपनी संस्कृति के प्रति लोगों के मन में जो लगाव है उसे अभिव्यक्त करता है।

अपनी भाषा को बचाने के लिए भारतीय मजदूरों द्वारा किया गया संघर्ष, रहन-सहन आ रहा बदलाव, खान-पान, वेशभूषा तथा केशभूषा द्वारा अपनी संस्कृति की रक्षा के लिए प्रयत्न, पुराने गलत एवं समाजहित में बाधक रीति-रिवाज प्रथा परंपराओं का विरोध, तीज-त्यौहार, उत्सव पर्व के प्रति आस्था, खेल-कूद एवं मनोरंजन के द्वारा हो रहा शोषण तथा उसका विरोध करनेवाले सचेत पात्रों का भी चित्रण मिलता है। साथ ही भारतीय लोकगीतों की परंपराओं तथा विविध संस्कारों की रक्षा के लिए किए गए संघर्षों को शब्दबद्ध किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1) अभिमन्यु अनत – 'और पसीना बहता रहा' प्रका.वर्ष 1993 पृ. क्र. 303
2) विरेन्द्रनाथ द्विवेदी – 'आधुनिक हिंदी कविता में लोक तत्व', विद्या प्रका. कानपुर,प्र.सं.2004 पृ.क्र. 37
3) क्षेमेंद्र सुमन और योगेंद्र कुमार मल्लिक – 'साहित्य –विवेचन' आत्माराम अँड सन्स दिल्ली प्र.सं.1992 पृ.क्र.990-91
4) श्यामधर तिवारी-'अभिमन्यु अनत का व्यक्तित्व एवं कृतित्व' अभिनव प्रका.आगरा,प्र.सं.1997 पृ.क्र.229
5) अभिमन्यु अनत –'लाल पसीना' प्रका.वर्ष 1977 पृ. क्र. 118
6) अभिमन्यु अनत –'और पसीना बहता रहा' प्रका.वर्ष 1993 पृ. क्र. 53

*****

'ज्ञान, विज्ञान और सुसंस्कार के लिए शिक्षा प्रसार' - शिक्षणमहर्षि डॉ. बापूजी साळुंखे

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षा संस्था संचलित

विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापुर

(अधिकारप्रदत्त स्वशासी संस्था)

विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में हिंदी विभाग, आय. क्यू. ए. सी. तथा महाराष्ट्र हिंदी परिषद के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित

महाराष्ट्र हिंदी परिषद का 32 वाँ अधिवेशन एवं द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

"हिंदी गीत और ग़ज़लः विविध परिदृश्य"

शुक्रवार तथा शनिवार, दिनांक 9 एवं 10 जनवरी 2026

प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री / सुश्री डॉ. अंजली महेश उबाळे को परिषद के वार्षिक अधिवेशन एवं द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रमुख अतिथि/विशेष अतिथि/ विषय प्रवर्तक/ विशेष उपस्थिति/ सत्राध्यक्ष/प्रपत्र वाचक विषयः लोकगीत साहित्य व संस्कृती / सहभाग के रूप में शामिल होने हेतु यह प्रमाणपत्र ससम्मान प्रदान किया जाता है।

डॉ. गजानन चव्हाण	प्रो. (डॉ.) अनिल काळे	डॉ. आरिफ महात	डॉ. श्रुती जोशी	प्रो. (डॉ.) संजय थोरात
प्रधान सचिव, महाराष्ट्र हिंदी परिषद	अध्यक्ष, महाराष्ट्र हिंदी परिषद	संयोजक एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग	आय. क्यू. ए. सी., समन्वयक	प्राचार्य

'ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षणप्रसार'
-शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे

कोल्हापूर
NAAC Reaccredited 'A'
with CGPA -3.24 (in 3rd cycle)

ISSN : 2281-8848

VIVEK RESEARCH JOURNAL

A Biannual Peer Reviewed National Journal of Multi-Disciplinary Research Articles

A Special Issue - II

विशेषांक भाग-II

हिंदी गीत और ग़ज़ल: विविध परिदृश्य

January , 2026

'ज्ञान, विज्ञान और सुसंस्कार के लिए शिक्षा प्रसार' - शिक्षणमहर्षि डॉ. बापूजी साळुंखे

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षा संस्था संचलित

विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापुर

(अधिकारप्रदत्त स्वशासी संस्था)

विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में हिंदी विभाग, आय. क्यू. ए. सी. तथा महाराष्ट्र हिंदी परिषद के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित

महाराष्ट्र हिंदी परिषद का 32 वाँ अधिवेशन एवं द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

"हिंदी गीत और ग़ज़ल: विविध परिदृश्य"

शुक्रवार तथा शनिवार, दिनांक 9 एवं 10 जनवरी 2026

प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री / सुश्री प्रा. अर्पना संभाजी कांबळे

को परिषद के वार्षिक अधिवेशन एवं द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रमुख अतिथि/विशेष अतिथि/ विषय प्रवर्तक/ विशेष उपस्थिति/

सत्राध्यक्ष/प्रपत्र वाचक विषय: हिंदी फिल्मों में गीत और गजल का महत्व

/ सहभाग के रूप में शामिल होने हेतु यह प्रमाणपत्र ससम्मान प्रदान किया जाता है।

डॉ. गजानन चव्हाण	प्रो. (डॉ.) अनिल काळे	डॉ. आरिफ महात	डॉ. श्रुती जोशी	प्रो. (डॉ.) संजय थोरात
प्रधान सचिव, महाराष्ट्र हिंदी परिषद	अध्यक्ष, महाराष्ट्र हिंदी परिषद	संयोजक एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग	आय. क्यू. ए. सी., समन्वयक	प्राचार्य

'ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षणप्रसार'
शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे

कोल्हापूर
NAAC Reaccredited 'A'
with CGPA -3.24 (in 3rd cycle)

ISSN : 2281-8848

VIVEK RESEARCH JOURNAL

A Biannual Peer Reviewed National Journal of Multi-Disciplinary Research Articles

A Special Issue - III

विशेषांक भाग–III

हिंदी गीत और ग़ज़ल: विविध परिदृश्य

January , 2026

ISSN : 2581-8848

20	हिंदी फिल्मों में गीत और ग़ज़ल का महत्व	सतिश बाळु हारपडे	85-88
21	हस्तीमल हस्तीजी के ग़ज़लों में चित्रित सामाजिक परिदृश्य	वैष्णवी संजय शिंदे	89-92
22	हिंदी फिल्मी गीतकार एवं ग़ज़लकार	प्रा. सुषमा बाळाराम खोत	93-97
23	ग़ज़लों में सामाजिक परिदृश्य	प्रा. प्रतिक्षा शांताराम ठुंबरे	98-101
24	आचार्य श्री सत्यनारायण गोयंका के गीतों में जीवन मूल्य	डॉ. अनिल काळे मुकुंदा ठोंबरे	102-106
25	राहत इंदौरी के 'गूँज' गजल संग्रह में प्रतिरोधी स्वर	डॉ. प्राजक्ता शिवाजी कुरळे	107-110
26	हिंदी फ़िल्मों में गीत और ग़ज़ल का महत्व	समद हबीब जमादार	111-113
27	हिंदी फिल्मों में गीत और गजल का महत्व	प्रा.अपर्णा संभाजी कांबळे	114-117
28	हिंदी गीत और ग़ज़ल में प्रगतिशील चेतना	मीरा सिन्हा	118-122
29	हिंदी ग़ज़ल में सौंदर्य एवं प्रेम का चित्रण	नम्रता पंडित मोहिते	123-128
30	हिंदी ग़ज़लों में राजनीतिक परिदृश्य	प्रा. हसीना मालदार	129-131
31	इक्कीसवीं सदी के उपन्यासों में चित्रित आदिवासी लोकगीतों का अध्ययन	प्रा. रविदास एस पाडवी	132-134
32	हिंदी साहित्य के ग़ज़ल विधा में चित्रित नारी	नामदेव ज्ञानदेव शितोळे	135-138
33	हिंदी ग़ज़ल में सामाजिक परिदृश्य	प्रा. डॉ. प्रकाश महादेव निकम	139-143
34	हिंदी गीत और गजल में प्रगतिशील चेतना	प्रा डॉ. संजय नारायण पाटील	144-152
35	समकालीन हिंदी ग़ज़लों में चित्रित राजनीतिक चुनौतियाँ	सुश्री. श्रीदेवी बबन वाघमारे	153-156

'ज्ञान, विज्ञान और सुसंस्कार के लिए शिक्षा प्रसार' - शिक्षणमहर्षि डॉ. बापूजी साळुंखे

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षा संस्था संचलित

विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापुर

(अधिकारप्रदत्त स्वशासी संस्था)

विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में हिंदी विभाग, आय. क्यू. ए. सी. तथा महाराष्ट्र हिंदी परिषद के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित

महाराष्ट्र हिंदी परिषद का 32 वाँ अधिवेशन एवं द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

"हिंदी गीत और ग़ज़ल: विविध परिदृश्य"

शुक्रवार तथा शनिवार, दिनांक 9 एवं 10 जनवरी 2026

प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री / सुश्री किशोरी सुरेश टोणपे (शोधार्थी) को परिषद के वार्षिक अधिवेशन एवं द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रमुख अतिथि/विशेष अतिथि/ विषय प्रवर्तक/ विशेष उपस्थिति/ सत्राध्यक्ष/प्रपत्र वाचक विषय: हिंदी साहित्य में नवगीत का विकास और प्रवृत्तियाँ / सहभाग के रूप में शामिल होने हेतु यह प्रमाणपत्र ससम्मान प्रदान किया जाता है।

डॉ. गजानन चव्हाण	प्रो. (डॉ.) अनिल काळे	डॉ. आरिफ महात	डॉ. श्रुती जोशी	प्रो. (डॉ.) संजय थोरात
प्रधान सचिव, महाराष्ट्र हिंदी परिषद	अध्यक्ष, महाराष्ट्र हिंदी परिषद	संयोजक एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग	आय. क्यू. ए. सी., समन्वयक	प्राचार्य

ISSN: 2230-9578 Impact factor: 7.896
Web. https://jrdrvb.org Email: jrdrvb.org@gmail.com

Journal of Research and Development

Certificate of Publication

This is to certify that

किशोरी सुरेश टोणपे
एम. ए. बी. एड, सेट, पी. एचडी (कार्यरत) सहायक प्राध्यापक
दत्ताजीराव कदम आर्टस, सायन्स एण्ड कॉमर्स कॉलेज इचलकरंजी

has successfully published a research paper titled

दलित साहित्य और संविधान: संविधान, अधिकार और अस्तित्व

Volume 17, Issue 9 (IV) | ISSN: 2230-9578
Manuscript ID : JRD -2025-170918
DOI Link : https://doi.org/10.5281/zenodo.17710076

The paper was peer-reviewed and accepted for publication on the basis of its academic merit, originality, and relevance to the field.

We congratulate the author(s) on this scholarly contribution

Date of Publication:
October. 2025
Page No(s) : 97-99

Chief Editor
Dr. Ramesh V. Bhole
Journal of Research and Development

Journal of Research and Development

A Multidisciplinary International Level

Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access Journal

ISSN: 2230-9578 September - 2025 Volume-17 Issue-9(IV)

Mob: +91-9552416001 Website: https://jrdrvb.org Chief Editor: Prof. Ramesh V. Bhole

BLDE Association's

New Arts College, Tikota

Dist : VIJAYAPUR, KARNATAKA

(Affiliated to Rani Channamma University, Belagavi)

(Accredited with 'B+' Grade with CGPA 2.71 by NAAC at 4th Cycle)

IQAC AND DEPARTMENT OF HINDI

One day National Level Online Conference on

"हिंदी कहानी साहित्य विरासत और वर्तमान"

Certificate of Participation

This is certify that *Aparna Sambhaji Kamble* of *Dattajirao Kadam Art's Science & Commerce College Ichalkarnji* has successfully participated in a National Level Online Conference on "हिंदी कहानी साहित्य विरासत और वर्तमान" organised by Department of Hindi in association with Internal Quality Assurance Cell (IQAC) on 12-05-2026.

Prof. Sanjaya Rathod
Organizing Secretary

Prof. B.S.Belagali
IQAC Co-ordinator

Prof. P.S. Tolanur
Principal

Made for free with Certify'em

BLDE Association's

New Arts College, Tikota

Dist : VIJAYAPUR, KARNATAKA

(Affiliated to Rani Channamma University, Belagavi)

(Accredited with 'B+' Grade with CGPA 2.71 by NAAC at 4th Cycle)

IQAC AND DEPARTMENT OF HINDI

One day National Level Online Conference on

"हिंदी कहानी साहित्य विरासत और वर्तमान"

Certificate of Participation

This is certify that *Aparna Sambhaji Kamble* of *Dattajirao Kadam Art's Science & Commerce College Ichalkarnji* has successfully participated in a National Level Online Conference on "हिंदी कहानी साहित्य विरासत और वर्तमान" organised by Department of Hindi in association with Internal Quality Assurance Cell (IQAC) on 12-05-2026.

Prof. Sanjaya Rathod
Organizing Secretary

Prof. B.S.Belagali
IQAC Co-ordinator

Prof. P.S. Tolanur
Principal

Made for free with Certify'em

सत्यमेव जयते
Government of India

MALAVIYA MISSION
TEACHER
TRAINING PROGRAMME

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये
University Grants Commission

CERTIFICATE OF PARTICIPATION

NEP 2020 ORIENTATION & SENSITIZATION PROGRAMME

This is to certify that, **Dr.Anjali Mahesh Ubale,Assistant professor, Dattjirao Kadam Arts, Science & Commerce College Ichalkaranji** has completed the NEP 2020 Orientation & Sensitization Programme under Malaviya Mission Teacher Training Programme (MM-TTP) of University Grants Commission (UGC) Organized by UGC-Malaviya Mission Teacher Training Centre, Kumaun University, Nainital (Uttarakhand) from **05 January to 13 January ,2026**.

Director/Coordinator (MM-TTC)

सत्यमेव जयते
Government of India

MALAVIYA MISSION
TEACHER
TRAINING PROGRAMME

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये
University Grants Commission

CERTIFICATE OF PARTICIPATION

NEP 2020 ORIENTATION & SENSITIZATION PROGRAMME

This is to certify that, **Mr. NILESH VASANTRAO JADHAV,Head and Assistant Professor, Dattajirao Kadam [redacted] Art's, Science and Commerce College,Ichalkaranji** has completed the NEP 2020 Orientation & Sensitization Programme under Malaviya Mission Teacher Training Programme (MM-TTP) of University Grants Commission (UGC) Organized by UGC-Malaviya Mission Teacher Training Centre, Kumaun University, Nainital (Uttarakhand) from **05 January to 13 January ,2026**.

Director/Coordinator (MM-TTC)

"ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षणप्रसार" - शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, कोल्हापूर संचलित

आर्टस्, कॉमर्स अ‍ॅण्ड सायन्स कॉलेज, नागठाणे

हिंदी विभाग एवं

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला

दि. २३ अगस्त, २०२५

॥ प्रमाणपत्र ॥

प्रा./श्री./श्रीमती / डॉ. निलेश वसंत जाधव

महाविद्यालय दत्ताजीराव कदम आर्ट्स्, सायन्स अ‍ॅण्ड कॉमर्स कॉलेज, इचलकरंजी

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के बी.ए. भाग २ आधुनिक हिंदी गद्य साहित्य (Major प्रश्नपत्र क्रं. III और V) के (नई शिक्षा नीति NEP २०२० के अनुसार) पुनर्रचित पाठ्यक्रम पर आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला मे बीजभाषक/सत्राध्यक्ष/विषय-विशेषज्ञ/विषय प्रवर्तक/प्रतिभागी के रुप में उपस्थित रहने के उपलक्ष्य में यह प्रमाणपत्र प्रदान किया जाता है।

डॉ. गणेश गभाले	प्रा. शकिल आतार	प्रो. (डॉ.) सातप्पा सावंत	कॅप्टन डॉ. महेश गायकवाड
सह-संयोजक	संयोजक एवं हिंदी विभागाध्यक्ष	अध्यक्ष. हिंदी अध्ययन मंडल	प्र. प्रधानाचार्य

"ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षणप्रसार" - शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, कोल्हापूर संचलित

आर्टस्, कॉमर्स अँण्ड सायन्स कॉलेज, नागठाणे

हिंदी विभाग एवं

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला

दि. २३ अगस्त, २०२५

॥ प्रमाणपत्र ॥

प्रा./श्री./श्रीमती / डॉ. निलेश वसंत जाधव

महाविद्यालय दत्ताजीराव कदम आर्ट्स, सायन्स अँण्ड कॉमर्स कॉलेज, इचलकरंजी

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के बी.ए. भाग २ आधुनिक हिंदी गद्य साहित्य (Major प्रश्नपत्र क्रं. III और V) के (नई शिक्षा नीति NEP २०२० के अनुसार) पुनर्रचित पाठ्यक्रम पर आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला मे बीजभाषक / सत्राध्यक्ष / विषय-विशेषज्ञ / विषय प्रवर्तक / प्रतिभागी के रुप में उपस्थित रहने के उपलक्ष्य में यह प्रमाणपत्र प्रदान किया जाता है।

डॉ. गणेश गभाले	प्रा. शौकत आतार	प्रो. (डॉ.) सातप्पा सावंत	कॅप्टन डॉ. महेश गायकवाड
सह-संयोजक	संयोजक एवं हिंदी विभागाध्यक्ष	अध्यक्ष. हिंदी अध्ययन मंडल	प्र. प्रधानाचार्य

"ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षणप्रसार" - शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, कोल्हापूर संचलित

आर्टस्, कॉमर्स अॅण्ड सायन्स कॉलेज, नागठाणे

हिंदी विभाग एवं
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला

दि. २३ अगस्त, २०२५

॥ प्रमाणपत्र ॥

प्रा./श्री./श्रीमती / डॉ. अपर्णा संभाजी कांबळे

महाविद्यालय दत्ताजीराव कदम आर्ट्स्, सायन्स अॅण्ड कॉमर्स कॉलेज, इचलकरंजी

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के बी.ए. भाग २ आधुनिक हिंदी गद्य साहित्य (Major प्रश्नपत्र क्रं. III और V) के (नई शिक्षा नीति NEP २०२० के अनुसार) पुनर्रचित पाठ्यक्रम पर आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला मे बीजभाषक / सत्राध्यक्ष / विषय-विशेषज्ञ / विषय प्रवर्तक / प्रतिभागी के रुप में उपस्थित रहने के उपलक्ष्य में यह प्रमाणपत्र प्रदान किया जाता है।

डॉ. गणेश गभाले	प्रा. शौकत आतार	प्रो. (डॉ.) साताप्पा सावंत	कॅप्टन डॉ. महेश गायकवाड
सह-संयोजक	संयोजक एवं हिंदी विभागाध्यक्ष	अध्यक्ष. हिंदी अध्ययन मंडल	प्र. प्रधानाचार्य

"ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षणप्रसार" - शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, कोल्हापूर संचलित

आर्टस्, कॉमर्स अ‍ॅण्ड सायन्स कॉलेज, नागठाणे

हिंदी विभाग एवं

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला

दि. २३ अगस्त, २०२५

॥ प्रमाणपत्र ॥

प्रा./श्री./श्रीमती / डॉ. किशोरी सुरेश टोणपे

महाविद्यालय दत्ताजीराव कदम आर्टस्, सायन्स ॲण्ड कॉमर्स कॉलेज, इचलकरंजी

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के बी.ए. भाग २ आधुनिक हिंदी गद्य साहित्य (Major प्रश्नपत्र क्रं. III और V) के (नई शिक्षा नीति NEP २०२० के अनुसार) पुनर्रचित पाठ्यक्रम पर आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला मे बीजभाषक / सत्राध्यक्ष / विषय-विशेषज्ञ / विषय प्रवर्तक / प्रतिभागी के रुप में उपस्थित रहने के उपलक्ष्य में यह प्रमाणपत्र प्रदान किया जाता है।

डॉ. गणेश गभाले	प्रा. शकिल आतार	प्रो. (डॉ.) सातप्पा सावंत	कॅप्टन डॉ. महेश गायकवाड
सह-संयोजक	संयोजक एवं हिंदी विभागाध्यक्ष	अध्यक्ष. हिंदी अध्ययन मंडल	प्र. प्रधानाचार्य

Deccan Education Society, Pune

Willingdon College, Sangli

(An Autonomous College Affiiliated Shivaji University, Kolhapur)

CERTIFICATE

This is to certify that Prof. / Dr. /Shri /Smt. *नीलेश वसंतराव जाधव* of *शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापूर* has participated / presented Research Paper entitled *नरेंद्र नागदेव के कहानी साहित्य में चित्रित नारी* in the International Conference " **Anvaya - Transformative Frontiers of Emerging Trends in Humanities, Science and Technology (TFETHST)** " organized by Willingdon College, Sangli on 25^{th} March 2026 .

Dr. Shashikant Shrangare **Dr. Raju Kagne**
Co-Convener (TFETHST 2025-26)

Dr. Samir Terdalkar **Dr. Ravindra Kulkarni**
Organizing Secretary(TFETHST -2025-26)

Prof. Dr. Satappa Sawant
Officiating. Principal & Convener
(TFETHST-2025-26)

Deccan Education Society, Pune

Willingdon College, Sangli

(An Autonomous College Affiiliated Shivaji University, Kolhapur)

CERTIFICATE

This is to certify that *श्री. निलेश वसंतराव जाधव* of *अनुसंधाता,शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर* has participated and presented a Researh Paper entitled *नरेंद्र नागदेव के कहानी साहित्य में नारी विमर्श* in the International Conference "**Anvaya-Transformative Frontiers of Emerging Trends in Humanities, Science and Technology (TFETHST)** " organized by Willingdon College, Sangli on 25th March 2026.

Dr. Shashikant Shrangare Dr. Raju Kagne
Co-Convener (TFETHST- 2025-26)

Dr. Samir Terdalkar Dr. Ravindra Kulkarni
Organizing Secretary(TFETHST -2025-26)

Prof. Dr. Satappa Sawant
Officiating. Principal & Convener
(TFETHST-2025-26)

BLDE Association's

New Arts College, Tikota

Dist : VIJAYAPUR, KARNATAKA

(Affiliated to Rani Channamma University, Belagavi)

(Accredited with 'B+' Grade with CGPA 2.71 by NAAC at 4th Cycle)

IQAC AND DEPARTMENT OF HINDI

One day National Level Online Conference on

"हिंदी कहानी साहित्य विरासत और वर्तमान"

Certificate of Participation

This is certify that *Aparna Sambhaji Kamble* of *Dattajirao Kadam Art's Science & Commerce College Ichalkarnji* **has successfully participated in a National Level Online Conference on "हिंदी कहानी साहित्य विरासत और वर्तमान" organised by Department of Hindi in association with Internal Quality Assurance Cell (IQAC) on 12-05-2026.**

Prof. Sanjaya Rathod
Organizing Secretary

Prof. B.S.Belagali
IQAC Co-ordinator

Prof. P.S. Tolanur
Principal

Made for free with Certify'em

सत्यमेव जयते
Government of India

MALAVIYA MISSION
TEACHER
TRAINING PROGRAMME

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये
University Grants Commission

CERTIFICATE OF PARTICIPATION

NEP 2020 ORIENTATION & SENSITIZATION PROGRAMME

This is to certify that, **Dr.Anjali Mahesh Ubale,Assistant professor, Dattjirao Kadam Arts, Science & Commerce College Ichalkaranji** has completed the NEP 2020 Orientation & Sensitization Programme under Malaviya Mission Teacher Training Programme (MM-TTP) of University Grants Commission (UGC) Organized by UGC-Malaviya Mission Teacher Training Centre, Kumaun University, Nainital (Uttarakhand) from **05 January to 13 January ,2026**.

Director/Coordinator (MM-TTC)

सत्यमेव जयते

Government of India

MALAVIYA MISSION
TEACHER
TRAINING PROGRAMME

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

University Grants Commission

CERTIFICATE OF PARTICIPATION

NEP 2020 ORIENTATION & SENSITIZATION PROGRAMME

This is to certify that, **Mr. NILESH VASANTRAO JADHAV,Head and Assistant Professor, Dattajirao Kadam [redacted] Art's, Science and Commerce College,Ichalkaranji** has completed the NEP 2020 Orientation & Sensitization Programme under Malaviya Mission Teacher Training Programme (MM-TTP) of University Grants Commission (UGC) Organized by UGC-Malaviya Mission Teacher Training Centre, Kumaun University, Nainital (Uttarakhand) from **05 January to 13 January ,2026**.

Director/Coordinator (MM-TTC)

"ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षणप्रसार" - शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, कोल्हापूर संचलित

आर्टस्, कॉमर्स अ‍ॅण्ड सायन्स कॉलेज, नागठाणे

हिंदी विभाग एवं
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला

दि. २३ अगस्त, २०२५

॥ प्रमाणपत्र ॥

प्रा./श्री./श्रीमती / डॉ. अपर्णा संभाजी कांबळे

महाविद्यालय दत्ताजीराव कदम आर्ट्स्, सायन्स ॲण्ड कॉमर्स कॉलेज, इचलकरंजी

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के बी.ए. भाग २ आधुनिक हिंदी गद्य साहित्य (Major प्रश्नपत्र क्रं. III और V) के (नई शिक्षा नीति NEP २०२० के अनुसार) पुनर्रचित पाठ्यक्रम पर आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला मे बीजभाषक / सत्राध्यक्ष / विषय-विशेषज्ञ / विषय प्रवर्तक / प्रतिभागी के रुप में उपस्थित रहने के उपलक्ष्य में यह प्रमाणपत्र प्रदान किया जाता है।

डॉ. गणेश गभाले	प्रा. शौकत आतार	प्रो. (डॉ.) साताप्पा सावंत	कॅप्टन डॉ. महेश गायकवाड
सह-संयोजक	संयोजक एवं हिंदी विभागाध्यक्ष	अध्यक्ष. हिंदी अध्ययन मंडल	प्र. प्रधानाचार्य

"ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षणप्रसार" - शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, कोल्हापूर संचलित

आर्टस्, कॉमर्स अँण्ड सायन्स कॉलेज, नागठाणे

हिंदी विभाग एवं
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला

दि. २३ अगस्त, २०२५

॥ प्रमाणपत्र ॥

प्रा./श्री./श्रीमती / डॉ. किशोरी सुरेश टोणपे

महाविद्यालय दत्ताजीराव कदम आर्टस्, सायन्स अँण्ड कॉमर्स कॉलेज, इचलकरंजी

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के बी.ए. भाग २ आधुनिक हिंदी गद्य साहित्य (Major प्रश्नपत्र क्रं. III और V) के (नई शिक्षा नीति NEP २०२० के अनुसार) पुनर्रचित पाठ्यक्रम पर आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला मे बीजभाषक/सत्राध्यक्ष/विषय-विशेषज्ञ/विषय प्रवर्तक/प्रतिभागी के रुप में उपस्थित रहने के उपलक्ष्य में यह प्रमाणपत्र प्रदान किया जाता है।

डॉ. गणेश गभाले	प्रा. शकिल आतार	प्रो. (डॉ.) सातप्पा सावंत	कॅप्टन डॉ. महेश गायकवाड
सह-संयोजक	संयोजक एवं हिंदी विभागाध्यक्ष	अध्यक्ष. हिंदी अध्ययन मंडल	प्र. प्रधानाचार्य

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
IJARSCT
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 7, June 2026
Impact Factor: 8.2

3. कुलच्छिनी एवं कलंकिता नारी की समस्या:

'गिद्ध' कहानी की बावरे की माँ को गाँव का मुखिया और पांडुरंग घोरपड़े कुलच्छिनी एवं कलंकिता कहते थे और कहतेओर बोलते कि, "गाँव की इज्जतदार बहू-बेटियों पर कितना खराब असर पड़ेगा इन लोगों का गाँव में आने से।" 6 अपने आप को कुशल कूटनीतिज्ञ कहते थे। उन्हें जब चाहे तब गाँव से निकाल फेंकने की बात करते तथा उससे कोई लाभ उठाया जा सके तो भी क्या हर्ज है? ऐसी सोंच रखने वाले निकम्मे दोगले इंसान थे ये। बावरे की माँ खोजकर एक घड़ा पानी लाकर गाँव के बाहर उसने एक चबूतरा एवं चपरी डाल दी थी। दिन भर धूप और लू के थपेड़ों के बीच वह उस पर बैठकर राहगीरों को जल पिलाती थी। उसकी माँ को लाभदायक थी तब तक झेल लिया इन्होंने। क्या बावरे की माँ का पुण्य भरा काम ही इतने सालों तक इसे इस गाँव में टीके रहने दिया था यह भी सोचने की बात है। नरेंद्र नागदेव जीने इस जल कुंभ की तुलना समुद्र मंथन से निकले अमृत-कलश से की है। हम अपने बड़े-बुजुरगोंसे सुनते आए है कि प्यासे की प्यास बुझाना बड़ा पुण्य का काम होता है और यह सही भी है ऐसा मुझे लगता है। 'रिश्ते' कहानी में अतुल के पिता ने अतुल की शादी करवाने के समय बुढ़ापे में अपने से बीस साल छोटी लड़की से शादी की थी। अतुल अपने से पाँच साल बड़ी इस लड़की से साथ कौनसा रिश्ता जोड़े समझ नहीं रहा था। अतुल घर छोड़ कर चला जाता है। कुछ समय बाद उसके मरने का टेलीग्राम आता है और जब उसका शव लाया जाता है तो वह घर से बाहर आकर अपनी चूड़ियाँ फोड़ती है, अपनी माँग पोछती है, अपना सिंदूर मिटाती है। तो मोहल्ले में अनाप-शनाप बाते होने शुरू हो जाते है। नरेंद्र नागदेव जीने यहाँ अपनी नैतिकता और अपनी उत्तरदायित्व निभाने की बात यांद दिलाना चाही है।

4. निसंतान नारी की समस्या:

'उतार' कहानी में नायक के चाचा जो बंबई में रहते थे। उन्हें कोई संतान न होने के कारण नायक की दीदी को बंबई ले गए थे। दीदी की शादी होने के बाद भी कई सालों तक संतान नहीं थी उसने बड़े भैया के छोटे लड़के को अपने साथबंबई ले जाने की बात कहते वक्त बोली थी कि, "जैसे चाचाजी ने मुझे रख लिया था। कोई बच्चा नहीं से घर सचमुच बड़ा सूना लगता है।" 7 पुत्र प्राप्ति न होना इसमें कोई नारी का दोष नहीं होता है।

'दूसरी दुनिया में' कहनी की जेसिंथा को कोई औलाद नहीं थी लेकिन बच्चे नहीं हैं इसका मातम न मनाते हुए वह अपने सेठ के बच्चों को ही अपने बच्चे समझकरबड़े दुलार से उनका लालन पालन करती है। उन्हें अपना ही समझती है। उनके सुख के लिए वह अपने पति तक को मार डालती है, क्योंकि माइकल सेठ के बच्चे को नशे का आदी बना रहा था इस लिए।

5. दिव्यांग बच्चे की समस्या :

नरेंद्र नागदेव जीजी ने अपनी कहानियों में 'समापन' का बबलू हो या 'वहीं रूक जाते' का चिंटू इन दिव्यांग पात्रों के द्वारा परिवार की नारी कैसे इन्हीं बच्चों के ईद-गिर्द उसकी दुनिया घूमती रहती है। नारी के जीवन में उसके बच्चे की अहमियत बहुत बड़ी होती है, बच्चा कैसा भी हो वह उसके आँख का तारा होता है जैसे 'समापन' सुजाता हो या 'वहीं रूक जाते' की सुलेखा हो अपने बच्चों में सुधार होगा वह भी आम बच्चों की तरह जीवन बिताएँगे ये आस छोड़ने के लिए कतई तैयार नहीं होती हैं। पति से ज्यादा ध्यान उनका इन बच्चों में अटका होता है। जिसके चलते पारिवारिक वातावरण थोड़ा तंग बन जाता है। उसे अगर बच्चा ना हुआ तो पूरा समाज बाँझ नारी के रूप में देखना शुरू कर देता है और अगर बच्चा दिव्यांग जन्मा हो तो भी घरवालों के तानों को सुनना पड़ता है। दोनों हालातों में नारी को ही झेलना पड़ता है।

6. बेमेल विवाह की समस्या:

नारी के जीवन में विवाह बहुत बदलाव लाता है। नरेंद्र नागदेव जीकी 'प्रतिशोध' कहानी में अनुप और उसकी पत्नी की शादी के बाद अनुप को उसकी पत्नी जैसे कोई अनचाही विंज उसके घर में आ गयी है कि भावना निर्माण होने लगती है। अनुप दिखने में सुंदर था और उसकी पत्नी सावली थी। वह उसे पत्नी का दर्जा नहीं देता है और उसकी कमी पूरी करने के लिए शहर जाया करता है। जिसके चलते उसकी पत्नी पति का प्रेम पाने के लिए तड़पती रहती है। वहीं 'आक्रामक' कहानी में पूनम की शादी पैसेवाले पचांस साल के बुढे के साथ करवा दी जाती है जिसकी वह तीसरी शादी थी। पूनम की शादी तो हो जाती है मगर उसे उस गहर में पत्नी के अधिकार तक नहीं मिल पाते हैं। तो 'रिश्ते' कहानी में अतुल के पिता अतुल की शादी करवाने के बदले अपनी ही शादी

Deccan Education Society, Pune

Willingdon College, Sangli

(An Autonomous College Affiiliated Shivaji University, Kolhapur)

CERTIFICATE

This is to certify that Prof. / Dr. /Shri /Smt. *नीलेश वसंतराव जाधव* of *शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापूर* has participated / presented Research Paper entitled *नरेंद्र नागदेव के कहानी साहित्य में चित्रित नारी* in the International Conference " **Anvaya - Transformative Frontiers of Emerging Trends in Humanities, Science and Technology (TFETHST)** " organized by Willingdon College, Sangli on 25th March 2026 .

Dr. Shashikant Shrangare	**Dr. Raju Kagne**	**Dr. Samir Terdalkar**	**Dr. Ravindra Kulkarni**	**Prof. Dr. Satappa Sawant**
Co-Convener (TFETHST 2025-26)		Organizing Secretary(TFETHST -2025-26)		Officiating. Principal & Convener (TFETHST-2025-26)

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 7, June 2026 Impact Factor: 8.2

नागदेव के साहित्य की विशेषता यह है कि वे नारी को केवल पीड़ित रूप में नहीं, बल्कि एक सक्रिय और प्रतिक्रिया करने वाली सत्ता के रूप में प्रस्तुत करते हैं। कई स्थानों पर नारी अपने ऊपर हुए अन्याय के प्रति प्रतिरोध भी करती है, जो उसके आत्मबोध और स्वायत्तता का संकेत है। यह दृष्टिकोण समकालीन नारी-विमर्श के उस पक्ष को मजबूत करता है, जो नारी को एक सशक्त और निर्णयक्षम इकाई के रूप में स्वीकार करता है। अंततः कहा जा सकता है कि नरेंद्र नागदेव ने अपने कथा-साहित्य के माध्यम से समकालीन समाज में जी रही नारी के जीवन का सजीव और प्रामाणिक चित्र प्रस्तुत किया है। उनका साहित्य नारी-विमर्श को न केवल गहराई प्रदान करता है, बल्कि सामाजिक यथार्थ की नई परतों को भी उद्घाटित करता है। इस प्रकार, नागदेव का कथा-साहित्य नारी-अस्मिता, सामाजिक संरचना और आधुनिक जीवन की जटिलताओं को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध होता है।

संदर्भ

1. सेठ राजी, अंतक:रण के दाह की कहानियाँ, हंस पत्रिका, फरवरी, 2004 पृष्ठ क्र. 81
2. वहीं – पृष्ठ सं.- 82
3. सूर्यबाला, दै. समाचार अक्षर विश्व, उज्जैन, 1987 पृ. सं., 04
4. उदय प्रकाश, 'उसी नाव में' , सचिन प्रकाशन, नयी दिल्ली,1988 - किताब की भूमिका में लिखा है।
5. नरेंद्र नागदेव, वापसी के नाखून, (भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003) पृ. सं. – 63
6. नरेंद्र नागदेव, पेड़ खाली नहीं है (किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, 2017) पृ.सं.-42
7. नरेंद्र नागदेव, तमाशबीन, (नेशनल पब्लिकेशन हाऊस, नई दिल्ली, 1987) पृ. सं. – 99
8. रोहणी अग्रवाल, हिंदी उपन्यास में कामकाजी महिला, दिनमान प्रकाशन दिल्ली, प्र.सं.1992, पृ.सं. 130